ब्रह्मा ने 3 बार रची गई सृष्टि को बिगाड़ डाला

वी.सी.डी. नं. 2330 ऑडियो- 2816 प्रातः क्लास-10.11.66

प्रातःक्लास चल रहा था- 10.11.1966। गुरुवार को दूसरे पेज के मध्यादि में बात चल रही थी- जो गाते हैं शिव जयंती, शिव का प्रत्यक्षता रूपी जन्म अथवा जन्मभूमि। किसकी जन्मभूमि? कहेंगे- परमपिता परमात्मा की जन्मभूमि। कौन है वो परमपिता परमात्मा शिव? परमपिता परमात्मा अर्थात् दुनिया में जितने भी पिताएँ हैं और इस दुनिया की ही बात नहीं, तीनों लोकों में जितने भी पिताएँ हैं- उनके बीच में परमपिता, शिव जिसका कोई पिता नहीं। धर्मपिताओं का भी पिता होता है, जिसे धर्मपिताएँ गॉडफ़ादर के रूप में मानते आए हैं; परन्तु वो धर्मपिताएँ तो जानते ही नहीं हैं कि वो सुप्रीम गॉडफ़ादर कौन है; क्योंकि इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट आदि धर्मपिताएँ भी मनुष्य हैं। इस दुनिया में सभी मनुष्यों का एक बाप है। मनुष्य उन्हें कहा जाता है, जो मननात् मनुष्य कहे जाते हैं, मनन-चिंतन-मंथन करते हैं। उन मनन-चिंतन-मंथन करने वाले, मन वाले 500-700 करोड़ मनुष्यों में एक बीज-रूप बाप है, जिसे सब धर्मों में मान्यता प्राप्त है- आदम/ऐडम/आदिदेव/आदिनाथ; परन्तु वो मनुष्यों का पिता है, जिसे प्रजापिता (या प्रजापति) भी कहा जाता है। सारे मनुष्यमात्र में जो भी प्रजा है, सबका पिता है; परन्तु उस पिता का भी कोई पिता है, जिसे सुप्रीम गॉडफ़ादर कहा जाता है। पिताओं में उसकी सुपरमेसी है; परन्तु वो आत्माओं का पिता है और आत्माएँ सिर्फ़ मनुष्य में ही नहीं होती हैं; पशु-पक्षी, कीट-पतंगे, जो भी चलते-फिरते-बोलते हैं, उन सबमें आत्माएँ हैं। उन सभी आत्माओं का वो एक पिता है; परन्तु वो आत्माओं के बीच में जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है और आत्माएँ जन्म-मरण के चक्र में आती हैं; इसलिए पूर्वजन्मों की सारी बातें भूल जाती हैं। वो परमपिता, आत्माओं का बाप जन्म-मरण के चक्र में न आने के कारण त्रिकालदर्शी है; परन्तु है तो त्रिकालदर्शी- तीनों कालों को देखने वाला है; लेकिन देखने के लिए उसके पास आँखें नहीं हैं, सुनने के लिए कान नहीं हैं, कर्म करने के लिए हाथ नहीं हैं, बोलने के लिए मुख नहीं है; वो तो सिर्फ़ अति सूक्ष्म ज्योतिबिन्दु है। जिसके लिए गीता में कहा है-''अणोः अणीयांसम् अनुस्मरेत् यः।'' (गीता 8/9)- अणु से भी अणु रूप है और उस अणु रूप ज्योतिबिन्दु का नाम ही 'शिव' है, जो उसकी आत्मा का नाम है; उसको शरीर नहीं है। बाकी सभी आत्माएँ, सबको अपना शरीर होता है और नाम भी शरीर के ऊपर पड़ता है। नाम काम के आधार पर पड़ता है, शरीर और शरीर की इन्द्रियों से ही काम किया जाता है; परन्तु सुप्रीम सोल गॉडफादर को अपना शरीर ही नहीं है, तो काम के आधार पर नाम कैसे पड़ता है? वो तो निराकार बाप है और बाप है तो ज़रूर वर्सा देता होगा। वो बाप कैसे हो सकता है, जो वर्सा/इन्हेरिटेन्स ही न दे। तो वो आत्माओं का बाप, निराकार बाप निराकारी वर्सा देता है। किसको देता है? निराकारी आत्माओं का बाप है ना, तो किसको वर्सा देगा? जो निराकार आत्मा बनेंगे, जो नम्बरवार देहभान को छोड़ेंगी, उन आत्माओं को (वर्सा देगा), जो सुप्रीम सोल के नं०वार बच्चे कहे जाते हैं। आत्मा के बच्चे आत्मा ही होंगे ना! साँप के बच्चे साँप-जैसे, चींटी के बच्चे चींटी-जैसे, हाथी के बच्चे हाथी-जैसे और आत्मा के बच्चे आत्मा। मतलब इस मनुष्य-सृष्टि में सभी आत्माएँ देहधारी हैं, देह को धारण करने वाली हैं। जब तक देह का आधार छोड़ करके निराकारी ज्योति आत्मा न बनें, तब तक सुप्रीम सोल बाप के बच्चे नहीं; क्योंकि मनुष्य के बच्चे मनुष्य, जानवर के बच्चे जानवर और आत्मा के बच्चे आत्मा; परन्तु आत्मा तो अजर-अमर-अविनाशी है।

आत्मा कोई पैदा तो होती नहीं है; जन्म-मरण के चक्र में तो शरीर आता है। शरीर का जन्म होता है, शरीर की मृत्यु होती है; आत्मा का न जन्म होता है, न मृत्यु होती है; इसलिए आत्मा तो अविनाशी है; परन्तु जैसे गीता में कहा है- ''संगात् संजायते कामः।'' (गीता 2/62)- संग करने से कामना/इच्छा उत्पन्न हो जाती है। देहभान वालों

को इच्छा होती है। इच्छा मात्रम् अविद्या है, तो देहभान का नाम-निशान नहीं रहेगा। इस सृष्टि में देह धारण करने वाली जो भी आत्माएँ हैं, सबको सुख की इच्छा है। सृष्टि के आदि से ही, पहले जन्म से ही, जन्म-मरण के चक्र में आने वाली देव-आत्माएँ भी सुख भोगने की इच्छुक रहीं। कोई आत्माओं ने सृष्टि के आदि से ही ऊँचे-ते-ऊँचा सुख भोगा, श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ इन्द्रियों के द्वारा सुख भोगा। ज्ञानेन्द्रियों में भी श्रेष्ठ इन्द्रियाँ हैं ही आँखें। आँखें हैं ही सबसे ऊँची, फिर नम्बरवार दूसरी इन्द्रियाँ आती हैं और उनके सुख भी नम्बरवार अविनाशी हैं, अल्पकालिक हैं। जिन इन्द्रियों का सुख यानी श्रेष्ठ ज्ञानेन्द्रियों में आँखों का सुख दीर्घकाल का है और ज्ञानेन्द्रियों के मुकाबले, जो ज्ञानेन्द्रियाँ भी नम्बरवार हैं, उनके मुकाबले भ्रष्ट इन्द्रियों का सुख अल्पकालिक क्षणभंगुर है। सतयुग आदि से लेकर त्रेता, द्वापर, कलियुग- चारों युगों में जन्म-मरण के चक्र में आने वाली आत्माएँ धीरे-2 नीचे उतरती जाती हैं और उत्तरोत्तर अल्पकालिक सुख भोगती जाती हैं; इसलिए कलियुग अंत में जो कर्मेन्द्रियों का सुख है यानी भ्रष्ट इन्द्रियों का सुख है, वो क्षणभंगुर कहा जाता है।

आत्माएँ सुख-दुख के चक्र में आती हैं तो जन्म-मरण के चक्र में भी आती हैं; परन्तु आत्माओं का बाप शिव सुख और दुख के चक्र में नहीं आता, तो जन्म-मरण के चक्र में भी नहीं आता। क्यों? क्योंकि उसको अपना शरीर है ही नहीं; श्रेष्ठ इन्द्रियाँ भी नहीं हैं और भ्रष्ट इन्द्रियाँ भी नहीं हैं; वो सदा इन्द्रियों से परे है। तो जो है ही इन्द्रियों से परे, वो अपने बच्चों को कैसा सुख देगा? इन्द्रियातीत सुख ही देगा ना, इन्द्रियों से परे का सुख ही देगा ना! इसलिए वो जब इस सृष्टि में आता है और आ करके अपने बच्चों, जो नम्बरवार प्रैक्टिकली आत्माएँ बनते हैं; क्योंकि कोई बच्चे बड़े, कोई बच्चे छोटे, कोई पहले आत्मा बनते, कोई बाद में आत्मा बनते। तो दुनिया में परम्परा रही है कि बाप अपने बड़े बच्चे को वर्सा/इन्हेरिटेन्स देता है। तो सुप्रीम सोल बाप/सुप्रीम गॉडफ़ादर अपने बच्चों को कौन-सा वर्सा देता है- भ्रष्ट इन्द्रियों के सुख का वर्सा देता है, श्रेष्ठ इन्द्रियों के सुख का वर्सा देता है, ज्ञानेन्द्रियों के सुख का वर्सा देता है? नहीं! फिर कौन-सा वर्सा देता है? (किसी ने कहा-ज्ञान) इन्द्रियातीत- इन्द्रियों से अतीत/परे का सुख देता है। जो गायन है शास्त्रों में "अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो।" जिन गोप-गोपियों ने वो गुप्त पुरुषार्थ किया है; 'गोप-गोपी' का अर्थ ही है- गुप्त। मेल है तो गोप; फीमेल है तो गोपी। क्या गुप्त पुरुषार्थ? जो गुप्त पुरुषार्थ कोई को देखने में नहीं आता है; इसलिए गुप्त। बताओ, क्या गुप्त पुरुषार्थ है? गुप्त पुरुषार्थ है अपन को ज्योतिबिन्दु स्टार आत्मा समझना। इस पुरुषार्थ को कोई देख सकता है- कौन कितना पुरुषार्थ करता है? नहीं देख सकता ना! इसलिए गुप्त है और सिर्फ़ आत्मा समझने तक ही सीमित नहीं है; क्योंकि आत्मा समझना, अपन को आत्मिक ज्योतिबिन्दु रूप में देखना, यह तो उन्हीं आत्माओं का नम्बरवार काम है, जिन्होंने आत्माओं के बाप से जन्म लिया। कोई कहे- आत्मा जन्म लेती है क्या? आत्माओं का बाप है, तो बाप जन्म भी तो देता है; पहले जन्म देता है, बाद में इन्हेरिटेन्स/वर्सा देता है। यह दो काम तो बाप के मुख्य हैं ना! कौन-कौन-से काम? जन्म देना और वर्सा देना। तो कैसे जन्म देता है? (किसी ने कहा- दिव्य जन्म) दिव्य जन्म क्या होता है? (किसी ने कहा- आत्मा की पहचान) हाँ, जो भी जन्म-मरण के चक्र में आने वाली आत्माएँ हैं, इस सृष्टि में आदि से ही देह के बंधन में आई हैं; इसलिए देह और देह की इन्द्रियों का संग किया है, देह और देह की इन्द्रियों का सुख भोगा है। संग से ही सुख भोगा ना! तो देह से अटैचमेण्ट/लगाव लग जाता है और जब लगाव लग जाता है तो जिससे लगाव लग जाता है, वो अपना लगता है या पराया लगता है? जिससे अटैचमेण्ट हो जाता है, उसमें अपनापन आ जाता है। तो देह और देह की इन्द्रियों में लगाव लगने से, जन्म-जन्मांतर इन्द्रियों का सुख भोगते-2 ऐसा अटैचमेण्ट लग जाता है कि जन्म-मरण के चक्र में आने वाली आत्माएँ अपन को देह समझ बैठती हैं और जो हम स्वयं अणु रूप आत्मा हैं, उस स्वरूप को भूल जाती हैं। जिससे अटैचमेण्ट/लगाव लग जाता है, जिसका लगाव लग जाता है, वो अपने सुख को देखता है या जिससे लगाव लग जाता है, उसके प्रति ज़्यादा सोचता है? जिससे लगाव लग जाता है, उसके प्रति

ज़्यादा सोचता है। तो देह से लगाव लग गया तो आत्मा अपन को भूल गई और चारों तरफ देह के पंचभूतों वाले भौतिक ज्ञान के बारे में, देह के पदार्थों के बारे में, देह के सम्बंधों के बारे में, जीवन में जितने देह के सम्पर्क में आए हैं, उनके बारे में सोच-विचार चलता है; अपने स्वरूप को आत्मा बिल्कुल भूल जाती है।

जन्म-मरण के चक्र में आने वाली कोई भी आत्माएँ हों, जब भी आत्मलोक से इस सृष्टि पर उतरती हैं, तो पहले-2 अपन को ज्योतिबिन्दु आत्मा ही समझती हैं- चाहे वो देव-आत्माएँ हों और चाहे वो धर्मपिताएँ हों और चाहे वो धर्मपिताओं के फॉलोअर्स आत्माएँ हों। कम-से-कम पहले जन्म की शुरुआत में अपन को आत्मा समझेंगी; परन्तु देह में आ गई ना, देह का संग हुआ ना! पहले जन्म से ही देह का संग होता है, देह की इन्द्रियों का सुख लेते हैं, तो लगाव/अटैचमेण्ट शुरू हो जाता है। पहला-2 अटैचमेण्ट किससे होता है? शरीर से। और शरीर काहे से बना है? पाँच तत्वों से- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश। तो ये पाँच तत्वों से बने इस शरीर से आत्माओं का लगाव लगता है तो आत्माएँ अपने स्वरूप को सर्वथा भूल जाती हैं। देव-आत्माएँ, जिन्हें दिव्य आत्मा कहा जाता है, दिव्य जन्म लेने वाले बाप के बच्चे हैं, वो आत्मा के स्वरूप को जल्दी नहीं भूलते, आधाकल्प तक उनको अपने आत्मा के स्वरूप की स्मृति रहती है; क्योंकि जो देवता धर्म की आत्माएँ हैं, वो देवता धर्म किसने स्थापन किया? (किसी ने कहा- सनतकुमार) इस्लाम, बौद्ध, क्रिश्चियन आदि धर्म देहधारी धर्मपिताओं ने स्थापन किया, जो एक जन्म के लिए (आत्मिक स्मृति में रहते हैं), वो भी कोई ज़रूरी नहीं कि सारा ही एक जन्म; क्योंकि शुरुआत में आत्मिक स्मृति रहती है और उसी जन्म में अंत समय में देहभान में आ जाते हैं। तो उन धर्मपिताओं की तो ज़्यादा-से-ज़्यादा कहें- एक जन्म की आत्मिक स्मृति और बाकी (जन्म) देहभान। तो उनकी जो रचना हैं, उनके जो फॉलोअर्स हैं, वो भी ज़्यादा देहभान वाले ही होंगे, बहुत देह-अभिमानी बन जाते हैं; क्योंकि उनका बाप देहधारी धर्मपिता ही देहभानी है; और देव-आत्माएँ? मनुष्य को देवता कौन बनाता है, धर्मपिताएँ? मनुष्य को देवता वो बनाता है, जो कभी भी देहभान में नहीं आता; परन्तु स्वयं देवता नहीं बनाता। स्वयं बनाता या किसी को निमित्त बनाता? (किसी ने कहा- किसी को निमित्त बनाता) किसको निमित्त बनाता? (किसी ने कहा- मनुष्य-सृष्टि के बीज बाप को) जैसे दुनिया में जितने बाप हुए, सभी बापों ने अपने बड़े बच्चे को प्रॉपर्टी का निमित्त बनाया। तो सुप्रीम सोल गॉडफ़ादर भी, इस सृष्टि रूपी रंगमंच में जो भी प्राणीमात्र हैं, प्राण धारण करने वाली आत्माएँ, उनमें जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं, उन मनुष्यों के पिता को चुनता है, मनुष्य-आत्माओं के बीज को चुनता है। क्या करने के लिए? (किसी ने कहा- देवता बनाने के लिए) देवता तो बाद में बनाएगा और वो देवता बनाता भी नहीं है; क्योंकि डॉक्टर, डॉक्टर बनाता है; इंजीनियर, इंजीनियर बनाता है; वकील, वकील बनाता है। बनाने वाला खुद होगा तो दूसरों को बनाएगा? (किसी ने कहा- खुद बना होगा तब बनाएगा) बाप धनवान नहीं होगा, अपने बच्चे को धनवान बनाएगा? बाप ज़मीन-जायदाद वाला होगा, ज़मीनदार होगा, तो अपने बच्चों को भी ज़मीनदार बनाएगा और जो आत्माओं का बाप है, वो स्वयं देवता है? अगर देवता है, तो देवताओं के गुण भी होने चाहिए। देवताओं के गुण तो सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण अहिंसक, मर्यादा पुरुषोत्तम और वो शिव सभी देवताओं को देवता बनाने वाला नहीं है; लेकिन वो तो अकर्ता है। डॉक्टर, डॉक्टर बनाएगा; इंजीनियर, इंजीनियर बनाएगा, तो भाग्यशाली रथ सुप्रीम रचयिता भगवान शिवलिंग क्या बनाएगा? भगवान-भगवती बनाएगा कि देवी-देवता बनाएगा? भगवान-भगवती बनाता है। और भगवान-भगवती किसको बनाता है? (किसी ने कहा- बड़े बच्चे को)

वास्तव में भगवान एक होता है या दो/चार होते हैं, अनेक होते हैं? (किसी ने कहा- एक होता है) तो भगवान के साथ भगवती कहाँ से घुस पड़ी? भगवान तो हमेशा नम्बरवन है कि नम्बर दो भी है? वो तो नम्बरवन है। मुसलमान लोग भी कहते हैं- ''अल्लाह अव्वलदीन''। अल्लाह माने ऊँचे-ते-ऊँचा। हम भी कहते हैं- ऊँचे-ते-ऊँचा

भगवंत। तो जो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत है, वो ऊँचे-ते-ऊँचा ही बनाएगा और ऊँचे-ते-ऊँचा एक होगा या अनेक होंगे? एक ही होगा। तो जो भगवान के साथ भगवती है, वो भगवती, भगवान से पहले है या भगवान के बाद है? (किसी ने कहा- बाद है) बाद है माने रचना है ना! भगवान क्या हुआ? (किसी ने कहा- रचयिता) भल भगवान-भगवती कहा जाता है; परन्तु भगवान तो एक ही होता है- गॉड इज़ वन। अनेक भगवान नहीं हो सकते या दो नहीं हो सकते और गॉड इज़ वन क्यों कहा जाता है? क्योंकि सौ परसेण्ट सत्य कौन होगा? एक भगवान ही तो होगा। कोई कहे- क्यों होगा? क्योंकि वो साकारी सो निराकारी भगवान भी कभी बेहद के निश्चय-अनिश्चय रूपी जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता है; इसलिए स्वर्णिम संगम में तीनों कालों की सच्चाई को जानता है और सत्य को ही ज्ञान कहा जाता है। 'ज्ञान' माना जानकारी; झूठ की जानकारी नहीं, सत्य की जानकारी।

सुप्रीम सोल तो सत्य है ही; क्योंकि जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता है; लेकिन इस मनुष्य-सृष्टि में जब आता है, तो जिसमें प्रवेश करता है, जिसको अव्वल नम्बर में इस सृष्टि का अल्लाह अव्वलदीन चुनता है, 'दीन' माने 'धर्म', अव्वल नम्बर का धर्म स्थापन करने के लिए (उसको) धर्मपिता बनाता है। वो धर्मपिता सुप्रीम सोल बाप का एक ही बच्चा है, जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर 84 के चक्र में जब आता है तो आदि से ले करके अंतिम जन्म तक बाप को फॉलो करता है। कौन बाप? (किसी ने कहा- शिव बाप) गॉड इज़ ट्रुथ बाप। ट्रुथ इज़ गॉड; गॉड इज़ ट्रुथ। वो सत्य को फॉलो करता है और द्वैतवादी द्वापरयुग से, जब से ये द्वैतवाद फैलाने वाले धर्मपिताएँ आत्मलोक से आते हैं, तो इस सृष्टि में द्वैतवाद फैला देते हैं- दो-2 धर्म, दो-2 राज्य, दो-2 भाषाएँ, दो-2 मतें, दो से चार, चार से आठ, आठ से सोलह, मत-मतान्तर दुनिया में बढ़ता ही जाता है; नहीं तो इन धर्मपिताओं की हिस्ट्री उठाके देख लो। 2500 वर्ष की हिस्ट्री प्रूफ और प्रमाण सहित मनुष्यों के पास है, उस हिस्ट्री में मनुष्यों में मत-मतान्तर बढ़ा है या घटा है? बढ़ा है।

द्वैतवाद माना दुनिया में अनेक प्रकार के वायब्रेशन फैलते हैं। मनुष्य, मनुष्य की दृष्टि में भेद होता है, वाचा में भी भेद हो जाता है; ये भेदभाव की दुनिया बन जाती है। उस भेदभाव की अन्तिम दुनिया में सुप्रीम सोल बाप ने आ करके जो वसुधैव कुटुम्बकम् की एकता स्थापन की थी, सारी वसुधा/पृथ्वी हमारा कुटुम्ब/परिवार बनी थी। परिवार कब होता है? प्रैक्टिकल में एक बाप होगा तो परिवार होगा या दो-2/चार-2 बाप होंगे तो परिवार होगा? एक बाप। तो ऐसी सृष्टि परमपिता शिव आकर स्थापन करते हैं। किसके द्वारा? 'परमपिता' शब्द के साथ एक शब्द और जुड़ा हुआ है- परमपिता परमात्मा। ऐसे कभी नहीं कहेंगे- परमात्मा परमपिता। जैसे 'शंकर-शिव' कभी नहीं कहेंगे। क्या कहेंगे? (किसी ने कहा- शिव-शंकर) पहला नाम बाप का, बाद का नाम फॉलोअर/बच्चे का। तो परमपिता, जिसका कोई पिता नहीं, वो तो परमपिता एक तुरिया आत्मा है, उसके समान और कोई है ही नहीं; लेकिन जो और आत्माएँ जन्म-मरण के चक्र में आने वाली हैं, उनमें भी एक आत्मा है, जो इस सृष्टि पर एक ही साकारी सो निराकारी बनता है, जिसे 'हीरो पार्टधारी' कहा जाता है। ड्रामा/नाटक में हीरो एक होता है या दो/चार होंगे? विलियन होंगे, रावण सम्प्रदाय होंगे, शैतानों का सम्प्रदाय होगा; लेकिन हीरो एक ही होता है। वो हीरो, वो भी आत्मा है, जन्म-मरण के चक्र में आने वाली आत्मा है; लेकिन जब सुप्रीम सोल बाप इस सृष्टि पर आते हैं, उस मुकर्रर रथ वाले जन्म में वो बेहद के जन्म-मरण के चक्र में नहीं आती है। एक ही आत्मा है, जन्म-मरण के चक्र में आने वाली आत्माओं के बीच, जो जब से सुप्रीम सोल बाप, आत्माओं का बाप इस सृष्टि पर आता है, तब से लेकर कभी भी जन्म-मरण के चक्र में, उस युग में नहीं आती है। यह क्या बात हुई? इसका क्या मतलब? (किसी ने कहा- निश्चय-अनिश्चय के चक्र में नहीं आती) हाँ! बाप पर निश्चय है माना बाप का बच्चा है; साबित होता है कि बाप से जन्म लिया है और बाप पर निश्चय नहीं, तो साबित होता है- बाप का बच्चा नहीं है। निश्चय है तो बाप का बच्चा जन्म

लेने वाला और बाप के ऊपर अनिश्चय आया तो मृत्यु हो गई, बाप का बच्चा मर गया। माना जन्म-मरण के चक्र में आने वाली जो आत्माएँ हैं, आज बाप को पहचानती हैं और कल संशय आ जाता है। ''संशय आत्मा विनश्यते'' (गीता 4/40), तो मृत्यु हो जाती है। तो उस युग में, उस जन्म में उन आत्माओं को क्या कहेंगे, जब सुप्रीम सोल बाप शिव इस सृष्टि पर आते हैं और उस मानवी बाप को पहचानती हैं, फिर भूलती हैं, फिर पहचानती हैं, फिर भूलती हैं; तो उन आत्माओं के लिए क्या कहेंगे- जन्म-मरण के चक्र में आने वालीं या जन्म-मरण के चक्र से न्यारी हो गईं? सभी चक्र में आने वालीं और एक आत्मा जन्म-मरण के चक्र से न्यारी हो गई।

जो शास्त्रों में लिखा है कि ब्रह्मा ने तीन बार सृष्टि रची और तीनों बार पसंद नहीं आई, बिगाड़ दी। शास्त्रों में जो बातें हैं, वो कहाँ की यादगार हैं? (किसी ने कहा- संगमयुग की) संगम में सन् 1936/37 में सुप्रीम सोल बाप इस सृष्टि पर आया और जिस मुकर्रर रथ में आया, वो मुकर्रर रथ 1942 में खलास हो गया। मुरली में बोला है- लाश भी गुम कर दी। ''त्रिमूर्ति भी दिखाते हैं। सिर्फ शिव को उड़ा दिया है, उनका विनाश कर दिया है। ठिक्कर-भित्तर में ठोक उनका(उनकी) लाश गुम कर दिया है। वह है तो आत्मा ही। खाती भी है, वह ज्ञान का सागर भी है।'' (मु॰10.9.73 पृ॰1 मध्य) तो जब बाप ही नहीं रहा, तो परिवार में विघटन होगा या नहीं होगा? विघटन होता है। फिर दुबारा सृष्टि रची। सन् 1947 में ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की रचना हुई। पहले क्या नाम था? ब्राह्मणों की सृष्टि का नाम था- ओम् मण्डली, फिर 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नाम पड़ा; क्योंकि ब्रह्मा के द्वारा कार्य शुरू हुआ। सन् 1947 से लेकर 18 जनवरी, 1969 तक ब्रह्मा जीवित रहे, उसके बाद उन्होंने भी शरीर छोड़ दिया। जो ब्रह्माकुमार-कुमारियों का रचयिता/बाप था, वो ही चला गया, तो परिवार का क्या हाल होगा? लड़ेंगे या नहीं लड़ेंगे? (किसी ने कहा-लड़ेंगे) इसलिए मुरली में बोला है- द्वापरयुग जब आता है तो मनुष्य आपस में ही लड़ पड़ते हैं, अपना-2 प्रॉविन्स अलग-2 कर देते हैं। ''रावण जब (सत्ता में) आते हैं तो पहले-2 घर में ही लड़ाई शुरू होती है। जुदा-2 हो जाते हैं। ... अपना-2 प्राविंस (ज़ोन) अलग कर देते हैं।'' (मु॰8.8.68 पृ॰3 मध्यांत) इब्राहीम आया- अरब देश अलग कर दिया, बुद्ध आया- चीन, जापान देश/बौद्धी धर्मखण्ड अलग हो गया। ऐसे ही ब्रह्माकुमारियों में हुआ; ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोड़ा और जोनल इन्चार्ज बना दिए, अपना-2 ज़ोन ले करके बैठ गए। तो द्वैतवाद शुरू हुआ। पहले सारे ब्राह्मण परिवार का संचालन एक माउण्ट आबू से ब्रह्मा द्वारा होता था, तो विघटन हुआ कि नहीं? और यह विघटन की परम्परा तब तक चलती रही, जब तक परमपिता परमात्मा शिव का बोला हुआ वाक्य सच्चा साबित नहीं हुआ। क्या वाक्य बोला था? ''इन लक्ष्मी-नारायण का जन्म कब हुआ? आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।'' (सन् 66 की वाणी है) (मु॰4.3.70 पृ॰3 मध्य) तब इन लक्ष्मी-नारायण का जन्म हुआ। 1966 में बोला, उस हिसाब से सन् 1976 आता है और सन् 1976 साल के लिए ही लक्ष्मी-नारायण के चित्र में नीचे घोषणा दी गई थी कि ब्राह्मणों की पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना होगी। तो कौन-सी दुनिया के विनाश की बात थी? जो शास्त्रों में लिखा है कि ब्रह्मा ने तीन बार सृष्टि रची और तीनों बार पसंद नहीं आई, बिगाड़ दी। पहली बार रची सन् 1936/37 में, दूसरी बार रची सन् 1947 में और तीसरी बार रची सन् 1976 में और सन् 1976 में जो सृष्टि रची, जिसके लिए बोला- लक्ष्मी-नारायण का जन्म कब हुआ? तो लक्ष्मी-नारायण तो सतयुग के आदि के बताए जाते हैं ना, 16 कला सम्पूर्ण हैं ना! वो 16 कला सम्पूर्ण लक्ष्मी-नारायण जन्म लेंगे सतयुगी सृष्टि में, तो जब तक वो शूटिंग काल में भी कलाहीन न हो जाएँ, तब तक सृष्टि चलेगी या नहीं चलेगी? (किसी ने कहा- चलेगी) उनको भी तमोप्रधान होना है।

तो बताया, लक्ष्मी-नारायण तो बाप/शिवबाबा के बच्चे हैं। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनाने वाला कौन? जो नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनाने वाला है, वो बाप उन बच्चों को पहले से ही बता देता है। लक्ष्मी-

नारायण और यथा राजा तथा (प्रजा); लक्ष्मी-नारायण होंगे तो उनकी प्रजा भी तो कोई होगी कि नहीं? (सभी ने कहा- होगी) लक्ष्मी-नारायण विजयमाला के मणके बनेंगे, तो उनकी प्रजा भी विजयमाला का मणका बनेगी ना!

तो उनको 'तुम बच्चे' बोला। ''तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।'' (मु.ता.6.10.74 पृ.2 अंत) तो 1976 से 40 वर्ष जोड़ दिए, कौन-सा सन् आया? 2016। और 1976 को बाप का प्रत्यक्षता वर्ष बताया था। ''प्रत्यक्षता वर्ष मनाने के लिए सभी बीकेज़ ने बाप-दादा को अखबारों और काड्र्स द्वारा विशेष रूप से प्रत्यक्ष करने का प्रयत्न किया। ..... तो प्रत्यक्षता वर्ष मनाने का स्वरूप और साधन यही सबकी बुद्धि में है ना? ऐसा प्लैन बनाया है ना?'' (अ.वा.23.1.76 पृ.15 आदि, 16 मध्य) ''प्रत्यक्षता वर्ष मना रहे हो ना? बाप को प्रत्यक्ष करने से पहले स्वयं में (जो स्वयं की महिमा सुनाई)-इन सब बातों की प्रत्यक्षता करो, तब बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।'' (अ.वा.7.2.76 पृ.49 मध्य) कौन-से बाप का प्रत्यक्षता वर्ष- आत्माओं के बाप का प्रत्यक्षता वर्ष या मनुष्य-आत्माओं के बाप का प्रत्यक्षता वर्ष? मनुष्य-आत्माओं के बाप का प्रत्यक्षता वर्ष बताया था। मनुष्य-आत्माएँ तमोप्रधान और सतोप्रधान बनती हैं। तो बता दिया- 40 से 50 वर्ष लगते हैं तुम बच्चों को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में और यह भी बता दिया कि 1976 बाप का प्रत्यक्षता वर्ष तो है; लेकिन सम्पूर्णता वर्ष नहीं है। सम्पूर्णता वर्ष कौन-सा? सन् 1977। ''शक्तियों द्वारा सर्वशक्तिवान की प्रत्यक्षता होगी। शक्तियों की सम्पूर्णता जैसे अन्धों के आगे आइने का काम करेगी। सम्पूर्णता वर्ष अर्थात् यह सम्पूर्णता।'' (अ.वा.26.1.77 पृ.48 अंत) तो 1977 से 40 वर्ष जोड़िए, 2017 (आता है)। 2017 (में) 40 वर्ष पूरे होते हैं और वो बच्चे, कौन-से बच्चे? जिन बच्चों के ऊपर बाप का दिल होता है। बाप का दिल कौन-से बच्चे के ऊपर होता है? (किसी ने कहा- बड़े बच्चे पर) तो जो नर से नारायण बनने वाली आत्मा है- राम वाली आत्मा कहो, मनुष्य-सृष्टि का बीज को कितना टाइम लगता है? 40 वर्ष।

तो बताया कि यह सृष्टि के तीसरी बार निर्माण की बात है या चौथी बार? तीसरी बार निर्माण हुआ। तो शास्त्रों में लिखा है- ब्रह्मा ने तीन बार सृष्टि रची और तीनों बार बिगाड़ दी। सृष्टि रची, सृष्टि बिगाड़ दी, तो जो मनुष्य-सृष्टि है, उस सृष्टि का जन्मदाता भी बिगाड़ दिया क्या? मनुष्य-सृष्टि का जो बीज है, उस बीज को भी बिगाड़ा जा सकता है क्या? बीज तो अविनाशी है। मनुष्य-सृष्टि रूपी झाड़ है ना! झाड़ में पत्ते विनाशी हैं, तना विनाशी है, टहनियाँ विनाशी हैं, फल विनाशी हैं, फूल विनाशी हैं; फिर क्या अविनाशी है? (किसी ने कहा- बीज) सन् 1936 में भी ब्राह्मणों की नई सृष्टि रची गई, उस समय भी वो बीज निश्चय-बुद्धि रहा और सन् 1947 में दूसरी बार जो सृष्टि रची गई, उसमें भी वो बीज (निश्चय-बुद्धि रहा)। जब झाड़ सम्पन्न होता है, बड़ा हो जाता है, तो उस सम्पूर्ण झाड़ में से कौन-सा भाग अपने को डिटैच कर देता है? झाड़ का फल पकता है, फल के अंदर बीज डिटैच हो जाता है। इसलिए कोई भी किसान/बागवान से पूछना, कोई भी पौधे या वृक्ष के पहले फल का जो बीज होता है, उसे बोना वो सबसे श्रेष्ठ मानते हैं; क्योंकि पावरफुल होता है। तो 1976 में भी वो ही बीज है। 1976 में तीसरी बार ब्राह्मणों की सृष्टि रची गई। भले 2017 में सारी ब्राह्मण सृष्टि एक तरफ़ हो जाए और वो बीज-रूप बाप अकेला रह जाए, डिटैच हो जाए, उस बीज का विनाश नहीं होगा और सारे झाड़ का अनिश्चय-बुद्धि होने से विनाश हो जाता है। बीज रहेगा तो वृक्ष फिर पैदा हो जाएगा। बीज रहेगा और पुराना वृक्ष विनाश हो जाएगा। क्या 1976 में ऐसा हुआ था? 1976 में ब्राह्मणों की पुरानी दुनिया विनाश हुई, ब्राह्मणों की नई दुनिया की शुरुआत हुई। कोई कहे- विनाश कैसे हो गई? वो ब्रह्माकुमार-कुमारियों की दुनिया विनाश हो गई कि अभी भी चल रही है? और ठर्रे से चल रही है! धड़ाके से चल रही है! दो लक्ष्मी-नारायण के लिए ''आप मुये मर गई दुनिया।''

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, बिना समाज के मनुष्य जिंदा नहीं रह पाता। भले संन्यासी जंगल में चले जाते हैं; फिर भी वो आख़रीन जब तमोप्रधान बनते हैं तो समाज के अंदर घुस पड़ते हैं! ये समाज की लोकलाज़, परम्पराएँ मनुष्य-जाति को अपने में बाँधकर रखती हैं।

हमारा सामान्य परिवार होता है ना! उसमें कौन-सा ऐसा सम्बंधी होता है, जिससे परिवार के सभी भांतियों को बड़ा प्यार आता है? कौन? (सभी ने कहा- माँ) ऐसे ही परमपिता शिव जब आता है और ब्राह्मण-सृष्टि रचता है, उस ब्राह्मण-सृष्टि में भी माँ बच्चों के मोह को नहीं छोड़ पाती और बच्चे माँ को नहीं छोड़ पाते। अगर यदा-कदा माँ छोड़ करके अलग भागना भी चाहे तो बच्चे पीछे पड़ जाते हैं, उसे स्वतंत्र नहीं होने देंगे। ऐसे ही सन् 1936 में ब्राह्मणों की सृष्टि रची गई; 1942 से 47 के बीच विघटन हुआ, बिगाड़ दी गई। तो भी उस ब्राह्मणों की सृष्टि को सन् 1947 में किसने अपनी मुट्ठी में ले लिया? ब्रह्मा माने बड़ी अम्मा ने अपनी मुट्ठी में ले लिया। ले लिया ना! इसी तरह 1947 में ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि रची गई और 1969 से 1976 के बीच बिगड़ गई; एक के लिए बिगड़ गई या सबके लिए बिगड़ गई? ''आप मुये मर गई दुनिया''- एक की बात है या सबके लिए है? (किसी ने कहा- एक के लिए) एक किसके लिए? मनुष्य-सृष्टि के बाप के लिए। पहले भी सन् 1942 में एक आत्मा एक तरफ़ और सारी दुनियाँ दूसरी तरफ़। ऐसे ही सन् 1976 में भी एक आत्मा एक तरफ़ हो गई। कौन- बाप कि माँ? बाप अलग हो गया और माँ ने ब्राह्मणों की सृष्टि को छोड़ दिया क्या? दादा लेखराज ब्रह्मा ने भी नहीं छोड़ा, जिन्होंने भल अपना शरीर छोड़ दिया।

चलो, वो तो अव्यक्त शरीर/सूक्ष्म शरीर की बात है। 1976 में बाबा की वाणी के अनुसार एक का नई सृष्टि में जन्म हुआ या दो का जन्म हुआ? दो का जन्म हुआ। एक ने पुरानी ब्राह्मण-सृष्टि को लात मार दी। किसने? पुराने-2 कोई ब्रह्माकुमार-कुमारी बैठे होंगे, वो जानते होंगे कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में पहले गेट पर बड़ा बोर्ड लगाया जाता था, उसमें कृष्ण का चित्र छपा होता था। हाथ में स्वर्ग/तीरी पर बहिश्त दिखाई गई और लात में, नरक को लात मार रहा है। 1976 के बाद वो चित्र गायब हो गए; क्योंकि ब्रह्माकुमारियों ने उसका रहस्य समझा ही नहीं। माने लक्ष्मी-नारायण का जन्म होगा तो संगमयुगी कृष्ण का जन्म होगा या नहीं होगा? तो संगमयुगी कृष्ण के हथेली पर नई दुनिया का संगठन/ब्राह्मण सो देवता बनने वालों का संगठन दिखाई पड़ता है, नई दुनिया का नक्शा बुद्धि रूपी हथेली पर दिखाई पड़ता है और पुराना ब्राह्मणों का संगठन, जो अपन को ब्रह्माकुमार-कुमारी कहते हैं, उनको लात मार देता है।

ये तो हुई बाप की बात, नारायण वाली आत्मा की बात। फिर नारायण वाली आत्मा के साथ और दूसरी आत्मा कौन बताई? नारायणी/लक्ष्मी। लक्ष्मी कहाँ जाती है? वो तो सृष्टि की माता है ना! वो नारायण के साथ जाती है या पुरानी जो ब्राह्मणों की दुनिया है, उसके साथ रहती है? महाभारत की कुन्ती माता भी परिवार को नहीं छोड़ती। माँ बच्चों को नहीं छोड़ती और बच्चे माँ को नहीं छोड़ते। अभी भी वो माता कहाँ है, जो जगतजननी कही जाती है? बी०के० वाली पुरानी ब्राह्मणों की दुनिया के साथ; बाप डिटैच हो जाता है। फिर सवाल यह है कि लक्ष्मी-नारायण दोनों का जन्म हुआ या अकेले नारायण का हुआ? (किसी ने कहा- दोनों का हुआ) तो जब दोनों का जन्म हुआ तो वो अलग क्यों और वो अलग क्यों? (किसी ने कहा- सतयुग में आती है साथ देने) नहीं! क्योंकि माँ होती है भावनावादी और बाप होता है बुद्धिवादी। जो भावनावादी आत्माएँ होती हैं, वो ज़्यादा पवित्र होती हैं या बुद्धिवादी आत्माएँ ज़्यादा पवित्र होती हैं? (सभी ने कहा-भावनावादी) जो भावनावादी होती हैं, पवित्र आत्माएँ होती हैं, उनको बंद आँखों के साक्षात्कार होते हैं। बुद्धिवादियों को साक्षात्कार होते हैं? (सभी ने कहा- भावनावादी को साक्षात्कार होते हैं।) तो वो माँ भावनावादी होने के कारण, भगवान बाप/आत्माओं के बाप/सुप्रीम सोल गॉडफ़ादर जो कहते हैं कि

साक्षात्कार की चाबी मैं अपने पास रखता हूँ; किसी को देता नहीं हूँ। ''दिव्यदृष्टि की चाभी मैं अपने पास ही रखता हूँ। यह किसको नहीं देता हूँ।'' (मु.ता.19.11.73 पृ.2 अंत) किसको साक्षात्कार कराता है- बुद्धिवादियों को साक्षात्कार कराता है या भावनावादियों को साक्षात्कार कराता है? (किसी ने कहा- भावनावादियों को) तो वो सृष्टि की माँ, जो लक्ष्मी कही जाती है, महागौरी कही जाती है, वो ईश्वरीय साक्षात्कार के आधार पर टिकी रहती है और नारायण वाली आत्मा बीज-रूप है, ठोस रुद्रमाला का मणका है, बुद्धिवादी है; इसलिए उसे साक्षात्कार की दरकार नहीं है। बुद्धि का काम है- मनन-चिंतन-मंथन करना, समझना और समझाना। समझ को बुद्धि कहा जाता है। वो बुद्धि के आधार पर, ज्ञान के आधार पर साक्षात्कार करती है; भावना के आधार पर साक्षात्कार की दरकार नहीं है और स्वप्न और साक्षात्कार पर विश्वास भी नहीं करती। तो जो माँ है, वो बच्चों का पक्ष लेती है या बाप का पक्ष लेती है? बच्चों का पक्ष लेती है और बच्चे भी माँ को छोड़ते नहीं हैं। क्यों? क्योंकि बच्चे जानते हैं- जो बाप है, वो सारी प्रॉपर्टी तो बड़े बच्चे को दे देता है। जो छोटे बच्चे हैं, उन्हें बाप से तो कुछ मिलता नहीं। छोटे बच्चों को माँ का प्यार तो मिलता है; कि नहीं मिलता है? उस प्यार के आधार पर, अनुभव के आधार पर वो माँ को नहीं छोड़ सकते और माँ बच्चों को नहीं छोड़ सकती। यज्ञ के आदि में, सन् 1947 में भी ऐसे ही हुआ था, भले वो ब्रह्मा दाढ़ी-मूँछ वाली माँ थी; लेकिन काम तो माँ का था ना, सहनशीलता तो माँ के जैसी थी। तो यहाँ भी माँ विनाशी दुनिया के विनाशी बच्चों के साथ (रहती है) और बीज बाप डिटैच हो जाता है।

फिर अव्यक्त-वाणी में बोला- बाप भी अकेला नहीं है। ''साकार अकेला नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है।'' (अ.वा.18.1.70 पृ.166 अन्त) रुद्रमाला साथ में है कि नहीं? (सभी ने कहा- है) तो एक-2 करके वो रुद्रवत्स इकट्ठे होते रहते हैं। उस रुद्रमाला में भी कोई मूल अर्थात् आधार रूप में माँ है या नहीं है? कौन? (किसी ने कहा- योगिनी माँ) योगिनी माँ मूल अर्थात् आधार रूप में माँ है? (किसी ने कहा- जगदम्बा) आप योगिनी माँ से पैदा हुए थे या जगदम्बा से पैदा हुए थे? (किसी ने कहा- जगदम्बा) तो जो मूल अर्थात् आधार रूप में रुद्रमाला में माता है, एडवांस पार्टी जिसे कहा जाता है, वो जगदम्बा है तो रुद्रमाला का लास्ट मणका; लेकिन लास्ट मणका होते हुए भी फर्स्ट मणके के और फर्स्ट और लास्ट दोनों ही मणके सुप्रीम सोल बाप के नज़दीक हैं। फर्स्ट नज़दीक होना चाहिए; लास्ट क्यों नज़दीक होना चाहिए? लास्ट सो फास्ट भी हो सकता है। दूसरी बात, माताएँ ही असुर संघारिणी गाई हुई हैं। कलियुग के अंत में सारी दुनियाँ, मनुष्यमात्र दुखदायी, असुर, राक्षस बन जाते हैं। ऐसी कोई मनुष्य-आत्मा नहीं होती है, जो तन से, मन से या धन से भी या तन की इन्द्रियों से दूसरों को कभी दुख न देती हो; सारे ही राक्षस सम्प्रदाय बन जाते हैं। तो ऐसे तो देवियाँ नम्बरवार हैं; लेकिन उनमें एक लास्ट वाली देवी ऐसी है, जो महाकाली कही जाती है। उसका काम है दुनिया के सारे असुरों का खात्मा कर देना। किस बात में आसुरी लक्षण? वो मूल बात कौन-सी है, जिसमें आसुरी लक्षण आते हैं? (किसी ने कहा- देह-अभिमान) तो सबके देहभान को खलास कर देती है- मुण्डी अलग और देहभान अलग। बाप भी यही कहते हैं- बच्चे, तुम सबको मच्छरों सदृश ले जाऊँगा। ''मैं मच्छरों सदृश्य सबको ले जाऊँगा।'' (मु.ता.26.10.77 पृ.3 मध्य) मच्छरों में माँस होता है? देह का अंश होता ही नहीं। देहभान खलास करके ले जाऊँगा, मच्छरों सदृश ले जाऊँगा। यह काम किससे कराता है? (किसी ने कहा- महाकाली से) शक्तियों से, असुर संघारिणी शक्तियाँ गाई हुई हैं। उनमें कौन-सी आत्म रूपी शक्ति है, जो सभी मनुष्य-आत्माओं के मुकाबले, एक बीज बाप को छोड़कर, सबसे जास्ती पावरफुल है? (किसी ने कहा- जगदम्बा, महाकाली) जगदम्बा सात्विक स्टेज का नाम है और महाकाली तामसी स्टेज का नाम है।

तो जो महाकाली जगत अम्बा है वास्तव में, जगत माने 500 करोड़ की अम्बा, हर धर्म वालों की अम्बा। कहाँ जन्म लेती है? (किसी ने कहा- कलकत्ता में) कलकत्ता में तो बाप आता है! अव्यक्त-वाणी में बोला है-

''देहली के तरफ सभी की नज़र है। बाप की भी नज़र है, तो सर्व की भी नज़र है।'' (अ.वा.26.12.78 पृ.155 अंत) देखने में भी आता है। दुनिया में वो एक शहर कौन-सा है, जहाँ ज़्यादा-से-ज़्यादा तादाद में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई रहे पड़े हैं? (किसी ने कहा- महाभारत प्रसिद्ध धर्मराज युधिष्ठिर की नगरी, दिल्ली) दिल्ली ही ऐसी जगह है, जिस दिल्ली की गोद में सब धर्म वालों ने राज्य किया है। दिल्ली की गोद में सब धर्म के बच्चे खेले हैं और मनमाना राज्य किया है। खून की नदियाँ भी दिल्ली में बहाई हैं। इसलिए बोला- ''दिल्ली में नाम बाला होना, भारत में नाम बाला होना है।'' (अ.वा.24.1.70 पृ.189 मध्य) ''दिल्ली का परिवर्तन अर्थात् विश्व का परिवर्तन।'' (अ.वा.20.6.77 पृ.3 अंत) तो किसका परिवर्तन बड़ा मुश्किल है कि एक के परिवर्तन होने से सारी दुनियाँ का परिवर्तन हो जावेगा, सारे भारत का सुधार हो जावेगा; एक के बिगड़ने से सारी दुनियाँ बिगड़ जाती है, सारा भारत बिगड़ जाता है? वो कौन आत्मा है? (किसी ने कहा- प्रजापिता) प्रजापिता? वाह पठ्ठे! सही बात है, कोई-2 बच्चे चण्डिका देवी माँ को सपोर्ट करते हैं। जो माँ को सपोर्ट करने वाले मायावी बच्चे होंगे, कभी-2 इतने तीखे होकर माँ को सपोर्ट करते हैं कि बाप की दाढ़ी ही खींच के रख देते हैं।

तो देखो, मनुष्य-सृष्टि के बीज-रूप बाप को छोड़ कर एक ही आत्मा है जो सारी मनुष्य-सृष्टि के बीच में सबसे जास्ती पावरफुल है, उसका दूसरा नाम दिया है- प्रकृति। 'प्र' माने प्रकृष्ट रूपेण, 'कृति' माने रचना, प्रकृष्ट रचना है। कौन? (सभी ने कहा-जगदम्बा) इसलिए गीता में दो प्रकार की प्रकृष्ट रचना बताई हैं, दो प्रकार की विभूतियाँ बताई हैं- एक जड़ और एक चैतन्य। जड़ प्रकृति है- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश और उनके चैतन्य रूप हैं- पृथ्वी माता, जल देवता, वायु देवता, अग्नि देवता। तत्व रूप में चैतन्य भी हैं। जैसे पाँच तत्व जड़ हैं वैसे ये चैतन्य आत्माएँ भी जड़त्वमयी बुद्धि वाली हैं। उन पाँचों में सबसे जास्ती जड़त्वमयी बुद्धि है- पृथ्वी। पृथिव्याति माने विशाल रूप धारण करती है। उसकी विशालता का भक्तिमार्ग में एक अवतार भी दिखाय दिया है? कौन-सा अवतार? (किसी ने कहा- मत्स्य अवतार) कहते हैं- एक ऋषि जी थे या कोई राजा थे। उन्होंने अपनी अंजलि में मछली को ले लिया। घर ले आए, उसको बर्तन में डाल दिया। वो दूसरे दिन फिर बढ़ गई। बड़े घड़े में डाल दिया, फिर बढ़ गई। उसको, बड़ा टब बनाया, उसमें डाल दिया, फिर बढ़ गई। तालाब में डाल दिया, फिर बढ़ गई। नदी में डाल दिया। बताओ, कौन-सी नदी में डाला होगा? (किसी ने कहा- गंगा) मछली का बड़ा रूप क्या होता है? मछलियों में एक बड़ा रूप होता है- क्रोकोडाइल/मगरमच्छ। मगरमच्छ के ऊपर कौन सवारी करती है? गंगा। तो उस पर और कोई सवारी नहीं कर पाता। गंगा सवारी करती है, अपने कण्ट्रोल में ले लेती है, अपने पेट में डाल लेती है। नहीं तो वो इतनी बड़ी मछली है कि सब मछलियों को खा जाती है; इसलिए प्रसिद्ध मत्स्य न्याय बना हुआ है कि बड़ी मछली छोटी मछलियों को खा जाती है और सागर में अनेक प्रकार की मछलियाँ होती हैं। सागर जड़ भी, सागर चैतन्य भी। चैतन्य सागर में भी चैतन्य मछलियाँ अनेक प्रकार की हैं। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है। बड़े-ते-बड़ी मछली जगदम्बा, मत्स्यावतार। तो सबसे जास्ती पावरफुल हुई ना! पाँच तत्व ज़्यादा पावरफुल हैं या एक बीज बाप को छोड़ करके बाकी मनुष्य-आत्माएँ ज़्यादा पावरफुल हैं? अरे, पाँच चैतन्य तत्वों को छोड़ करके बाकी जितने भी मनुष्यमात्र हैं, चैतन्य आत्माएँ, वो ज़्यादा पावरफुल हैं या पाँच चैतन्य तत्व ज़्यादा पावरफुल हैं? (किसी ने कहा- 5 तत्व) जैसे पाँच तत्व जब तामसी स्टेज में विकराल रूप धारण करेंगे, उनमें मुख्य है- पृथ्वी। वो जब तामसी रूप धारण करेगी, बड़े-2 भूकम्प लाएगी, इतने बड़े भूकम्प आएँगे जिनमें एक मंज़िल से ले करके सैंकड़ों-2 मंज़िलों की जो शहरों में इमारतें बनाई हुई हैं और जिन बहुमंज़िली इमारतों में ढेर-के-ढेर मनुष्य रहे पड़े हैं, सब धराशायी हो जाएँगे। दुनिया का/मनुष्य-सृष्टि का बड़े-ते-बड़ा विनाश होता है भूकम्प से। 'भू' माने पृथ्वी, 'कम्प' माने कम्पायमान। कोई में भी कँपकँपी कब पैदा होती है? (किसी ने कहा-वायब्रेशन) वायब्रेशन से तो कँपकँपी हो सकती है; लेकिन वो कँपकँपी आती किसलिए है? (किसी ने कहा- भय पैदा होता है) जब बहुत भयभीत हो जाते हैं तो कँपकँपी छूट जाती है और

भयभीत हो जाते हैं। जब कोई समस्या का समाधान ही नहीं मिलता, भयंकर समस्या सामने आ जाती है, तो मारे डर के कँपकँपी छूट जाती है।

भगवान को कौन प्रिय है? (किसी ने कहा- ज्ञानी तू आत्मा) ''ज्ञानी प्रभुहिं विशेष प्यारा", "न हि ज्ञानेन सदृशम् पवित्रम् इह वियते।'' (गीता 4/38)- ज्ञान के समान इस संसार में कुछ भी पवित्र नहीं है और ज्ञान माने जानकारी, सच्चाई। वो किसके पास है? (किसी ने कहा- शिवबाबा के पास) (किसी ने कहा- बाप के पास) सुप्रीम सोल बाप के पास सच्चाई है, तो वो ही एवरप्योर है। उस बाप के पास जो सच्चाई है, इसीलिए वह बापों का बाप है ना। तो किसी को देता होगा ना! (किसी ने कहा- बड़े बच्चे को देता है) तो जो सुप्रीम सोल बाप एवरप्योर है, वो एवर प्योरिटी की पावर मनुष्य-सृष्टि के बीज-रूप बाप को देता है। अरे, जो होगा उसके पास वही देगा ना! उस बाप के पास क्या है? अखूट सच्चाई का भण्डार है, अखूट ज्ञान का भण्डार है। ऐसा भण्डार है, जिस भण्डार में से सारा ही कोई निकाल ले जाए तो भी सारा ही बचता है। अभी वो सुप्रीम बाप ब्रह्मा के तन में बोलते हैं- बच्चे, मैंने अपने पास कुछ भी नहीं रखा। सब-कुछ जो मेरे पास था, वो बच्चों को दे दिया। ''बाप ने अपने पास कुछ रखा ही नहीं है। वह तो एक सेकेण्ड में पूरा ही वर्सा दे देते हैं। जो कुछ भी देने का रहता ही नहीं।'' (अ.वा.8.7.73 पृ.125 मध्यांत) क्या दे दिया? (किसी ने कहा-ज्ञान) निराकार बाप है तो निराकारी वर्सा देगा या साकारी वर्सा देगा? निराकार बाप ज्ञान का निराकारी वर्सा देता है। उस वर्से की जो कदर करेगा, वो फ़ायदे में रहेगा या नहीं रहेगा? (सभी ने कहा- फायदे में रहेगा) कदर नहीं करेगा तो फ़ायदे में नहीं रहेगा। धनवान बाप है, करोड़पति है, लखपति है, अरबपति है, संखपति है। उसका बच्चा सारा धन बर्बाद करने वाला है। कोई बच्चे ऐसे होते कि नहीं? तो धनपति बाप के धन की उसे कदर है? (किसी ने कहा- नहीं) कदर नहीं है तो क्या बन जावेगा? भिखमंगा बनेगा या नहीं बनेगा? (किसी ने कहा- भिखारी बन जाएगा) ऐसे ही, यह सुप्रीम सोल बाप है, जिसके पास अखूट सच्चाई का भण्डार है, ज्ञान है। कदर करने वाले नम्बरवार हैं। कोई सब-कुछ छोड़-छाड़ करके- तन भी तेरा, मन के संकल्प भी तेरे, यह टटपुँजिया धन भी तेरा, बीबी-बाल-बच्चे भी तेरे, सब-कुछ तेरा, कुछ नहीं मेरा। पेट के धंधे-धोरी भी मेरे नहीं, सब-कुछ सारा संसार तेरा; मुझे सिर्फ़ क्या चाहिए? (किसी ने कहा- बाप चाहिए) बाप किसलिए चाहिए? परिपूर्ण ज्ञानी बनने के लिए चाहिए। पूर्ण ज्ञानी बनकर क्या करता और फिर क्या कहता है? (किसी ने कहा- मन्मनाभव) 'मत्' मेरे, 'मना' मन में, 'भव' समा जा, मेरे मन में समा जा। कौन-सा बाप कहता है? (किसी ने कहा- शिवबाप) शिवबाप कहता है? उसको मन है? (किसी ने कहा-शिवबाबा का मन है) हाँ, शिवबाप को तो मन ही नहीं है, वो तो अमन है, सदा अमन-चैन में रहने वाला है; वो बैचेन कभी होता ही नहीं। तो वो निराकारी शिव बाप जो अमन है, वो यह वाक्य नहीं बोल सकता- मन्मनाभव। तो कौन बोलता है? (किसी ने कहा- साकार बाप, किसी ने कहा- सारे मनुष्यों का बाप) हाँ, मैं जिस तन में भी प्रवेश करता हूँ उसका नाम 'ब्रह्मा' रखता हूँ और ब्रह्मा तो अनेक हैं। ''अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम 'ब्रह्मा' रखना पड़े।'' (मु.ता.17.3.73 पृ.2 अंत) (किसी ने कहा- परम्ब्रह्म एक है) तो जो परम्ब्रह्म कहा जाता है, जिसके लिए शास्त्रों में भी लिखा है- ''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परम्ब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।'' उस परम्ब्रह्म को पहचानो, जो परमपिता का आधार है। परिवार में पिता का आधार कौन होता है? माता। परमपिता शिव का आधार कौन? (किसी ने कहा- परम्ब्रह्म) परम्ब्रह्म, मुकर्रर रथ-धारी आत्मा, जिसका रथ आदि में भी मुकर्रर था, मध्य में भी मुकर्रर है और अंत में भी मुकर्रर रहेगा।

तो परिवार बनाने के लिए पिता किसको आधार बनाता है? (किसी ने कहा- माता को) तो उसको नाम दिया- परब्रह्म, बड़े-ते-बड़ी माँ। प्रवृत्तिमार्ग का सच्चा बाप होगा तो जीवन में एक माता को आधार बनाएगा और अगर खुदा-न-खास्ता दूसरी/तीसरी माता को भी आधार बनाना पड़े, तो पहली माता को महत्व देगा, पहली माता की जो

रचना है- बच्चे, उनको महत्व देगा या दूसरी माताओं के बच्चों को ज़्यादा महत्व देगा? (किसी ने कहा- पहली माता के बच्चे को) तो भगवान आता है तब से ये परम्परा भारत में चली है। (किसी ने कहा- प्रवृत्तिमार्ग) प्रवृत्तिमार्ग की ये पक्की परम्परा है। जो पहली माता है और पहली माता से पैदा हुए जो बच्चे हैं, उनको बाप विशेष प्रिफरेन्स देता है; दूसरी/तीसरी माताओं को और उनके बच्चों को उतना महत्व नहीं देता। तो परमपिता परमात्मा शिव की पहली रचना कौन हुई? (किसी ने कहा- परम्ब्रह्म) सुप्रीम बाप पहले-2 किस पर फिदा होता है? माता पर फिदा होता है। विदेशी बाप है या स्वदेशी? (किसी ने कहा- स्वदेशी) माता के रूप में अव्वल नम्बर पार्टधारी जो आत्मा है, वह मनुष्य-सृष्टि का बाप भी है, उसको पहले-2 नई दुनियाँ रचने लिए माता बनाता है। परिवार के भांतियों के बीच में बाप पहले-2 किससे मिलन-मेला मनाता है? (किसी ने कहा- पत्नी से) पत्नी से, हाँ! तो सुप्रीम सोल बाप, मनुष्य-सृष्टि के बाप को पहले-2 अपनी माशूका बनाता है, खुद आशिक बनता है।

अब सुप्रीम सोल बाप जिसको माशूका बनाएगा, तो सारी दुनियाँ को उस आत्मा को अपनी माशूका बनाना पड़े या नहीं बनाना पड़े? (किसी ने कहा- बनाना पड़े) इसलिए एक शिवबाबा है माशूक और बाकी सारी दुनियाँ है आशिक और पहला नम्बर आशिक कौन है? सुप्रीम सोल शिव। आशिक, माशूक के पीछे भागता है या माशूका, आशिक के पीछे भागती है? (किसी ने कहा- आशिक, माशूक के पीछे भागता है।) तो शिवबाप क्या करता है? आशिक बनकर भले कितनी ऊँची कुर्सी पर बैठा है; जैसे- दुनिया में भी कोई महाराजा होते हैं, सम्राट होते हैं; बहुत ऊँची कुर्सी होती है, फिर उनका भी दिल किसकी तरफ़ दौड़ता है? माशूका के पीछे दौड़ता है ना! तो शिवबाप बोलते हैं- तुम्हारा आशूक बना है और जिस पर आशिक होते हैं, उसको सब-कुछ अर्पण करने के लिए तैयार रहते हैं या नहीं? (किसी ने कहा- तैयार रहते हैं) दुनिया में भी ऐसे ही होता है, जो भी परिवार का मुखिया है- बाप, वो माता को सब-कुछ सौंप देता है या नहीं? (किसी ने कहा- देता है) बच्चा तो बाद में पैदा होगा, पहले किसको सौंपता है? (सभी ने कहा- माता को) तो शिव बाप ने यज्ञ के आदि से ही उस आत्मा को पहले ही सब-कुछ सौंप दिया था। फिर कमी क्या रह गई, जो राम फेल हो गया? (किसी ने कहा- पूरा ज्ञान/नॉलेज नहीं थी) हाँ, जो नॉलेज है- तीनों कालों की नॉलेज, वो हथेली पर आम नहीं जमाया जा सकता। उस ज्ञान को धारण करने के लिए, जैसे दुनिया में भी दुनियावी नॉलेज धारण करने के लिए 18/20 साल पढ़ाई पढ़नी पड़ती है कि नहीं? (किसी ने कहा- पड़ती है) तो ऐसे ही, यज्ञ के आदि में पूरा ज्ञान नहीं था; इसलिए मनुष्य-सृष्टि का बीज बाप भी फेल हो गया; परन्तु जिस परम्ब्रह्म में परमपिता शिव प्रवेश करते हैं, उस ब्रह्मा की आयु कितनी? (किसी ने कहा- 100 साल) कब पूरी होती है? 1976 में पूरी होती है। जो मनुष्य-सृष्टि का बाप है, उसे सच्चाई/सत्य को ग्रहण करने में, गॉड इज़ ट्रुथ को अपना बनाने में कितना टाइम लगता है? 40 वर्ष। इसलिए पिछली अव्यक्त-वाणी में, जिन्होंने ध्यान से सुनी होगी, याद होगा- 5 दिसम्बर पहला-2 अव्यक्त-मिलन का दिवस बताया। वो पहला-2 अव्यक्त-मिलन का दिवस वास्तव में स्मृतिदिवस है, सच्चा-2 स्मृतिदिवस; 18 जनवरी नहीं, 5 दिसम्बर। इसका मतलब है कि वो मनुष्य-सृष्टि का बीज-रूप बाप पूर्वजन्म में फेल होकर दुबारा ब्राह्मण जन्म लेता है तो पिछले जन्म का ब्राह्मणत्व साथ लेकर आता है और वो आत्मा पूर्वजन्म में, जो पहले-2 यज्ञ के आदि में गीता का क्लैरिफिकेशन पिऊ के द्वारा मिलता था, जो सारा क्लैरिफिकेशन बाद में जब पहली-2 ब्राह्मणों की सृष्टि का विनाश हुआ, तो विनाशकारियों ने वो सारा भण्डार ज़मीनदोज़ कर दिया। वो कौन-सी आत्माएँ होंगी, जिन्होंने वो सच्चाई का सारा भण्डार ज़मीनदोज़ कर दिया? (किसी ने कहा- विदेशी-विर्धमी आत्माएँ) हाँ! मुसलमानों ने, हिस्ट्री में देखा जाए- हमारे शास्त्रों को फाड़-2 करके नदियों में फेंक दिया, ज़मीन में गाड़ दिया, भाड़ों में झोंक दिया, जला दिया, इस संगमयुग के शूटिंग काल में फिर वो ही आत्माएँ निमित्त बनती हैं।

यज्ञ के आदि की शूटिंग में ब्राह्मणों की दुनिया में जिन्होंने वो गीता का सारा क्लैरिफिकेशन ज़मीनदोज़ किया था, दूसरी बार ब्राह्मणों की सृष्टि तैयार होती है, उसमें भी ऐसे ही होता है। ब्रह्मा के द्वारा जो भी वाणियाँ निकलीं, उन वाणियों को फाड़-2 करके फेंक दिया गया, चाट-मसाला बनाकर खा लिया, कचड़े के डब्बे में फाड़कर फेंक दिया। नहीं तो 1951 से ले करके 1968 तक की 18 साल की 18 अध्यायी गीता- भगवान की वाणी, कितना सम्भाल के रखनी चाहिए; लेकिन (किसी ने बीच में कहा- सिर्फ़ वो 5 साल का रह गया) हाँ जी! वो भी तब, जब ब्राह्मणों की दुनिया में चारों चित्र तैयार हो चुके थे। तो अभी भी ऐसे ही हुआ; जैसे- अंग्रेज़ों ने विदेशों में, ज़र्मनी में ले जा करके अपने शास्त्रों का सारा अर्थ बदल डाला, मनमाना अर्थ निकाला। शास्त्रों में पढ़ा कि यादवों के पेट से लोहे के मूसल निकले तो उन्होंने मिसाइल्स बना डाले, उल्टा क्लैरिफिकेशन करके सब-कुछ उल्टा कर दिया। उसी उल्टेपन को सीधा करने के लिए भगवान को इस सृष्टि पर आना पड़ता है। निमित्त बनाता है मनुष्य-सृष्टि के बाप को और मनुष्य-सृष्टि का साकार बाप, निराकार बाप की प्रॉपर्टी की पूरी कदर करता है, बाप उसी बच्चे को प्रिफरेन्स देता है। क्यों, 500 करोड़ आत्माएँ उसके बच्चे नहीं हैं? (किसी ने कहा- हैं) तो उनको प्रिफरेन्स क्यों नहीं देता है? (किसी ने कहा- निभाने वाला एक ही है) क्या निभाता है? (किसी ने कहा- वो बाप की प्रॉपर्टी की कदर करता है; वो सभी ईश्वरीय ज्ञान की प्रॉपर्टी को अपनाते नहीं हैं। जो अखूट ज्ञान देता है, उसकी वो कदर करता है।) क्या कदर करता है? सतयुग में तो सब भूल जाते हैं। (किसी ने कहा- संगमयुग में अनुभव से कदर करता है।) बाकी चार युगों में कदर नहीं करता है तो चलेगा? एक जन्म में कदर करे; बाकी 84 जन्मों में बेकदरी कर दे। (किसी ने कहा- नहीं, 21 जन्म ऑटोमैटिक आता है।) ऑटोमैटिक आता है! माना सतयुग-त्रेता में वो ज्ञान रहता है? (किसी ने कहा-नहीं) बिंदु के सार-रूप में रहता है। ज्ञान का सार है- मैं शरीर नहीं हूँ, पाँच तत्वों का पुतला नहीं हूँ; मैं ज्योतिबिन्दु स्टार आत्मा हूँ। इसी सार का द्वापरयुग से उस माशूका परंब्रह्म आत्मा के द्वारा विस्तार शुरू होता है, जिसका नाम 'भारत' भी है। 'भा' माने ज्ञान की रोशनी, 'रत' माने लगा रहने वाला। द्वापर के आदि से ही, पहले-2 कौन-से ग्रन्थ/शास्त्र बनाए गए? वेद बनाए गए। ब्रह्मा के मुख से वेद निकले, उसको कहते भी हैं-'वेदव्यास'। और जो वेद बनाए गए, उनमें भी पहला शास्त्र है- 'श्रीमद्भगवत गीता'। किसकी गीता? भगवत, भगवान की बनाई हुई गीता। वो ही भारत वाली आत्मा, जो संगमयुग में सुप्रीम बाप को पहचानने के बाद बाप के ज्ञान में ही जीवनभर रत/लगी रहती है, जो बाप का धंधा सो बच्चे का धंधा; दूसरा कोई धंधा नहीं। तो 'वेदव्यास' नाम पड़ता है। भगवत गीता रची, उस श्लोक में भी आया है- व्यासप्रसादात् (गीता 18/75)- यह गीता किसकी प्रसन्नता से मिली? व्यास की प्रसन्नता से मिली। वेदों के बाद उनकी व्याख्याएँ निकलीं- आरण्यक और शतपथ ब्राह्मण आदि; उनकी भी व्याख्याएँ निकलीं- उपनिषद् और उनकी भी बाद में व्याख्याएँ निकलीं- पुराण- महाभारतपुराण, भागवतपुराण, रामायणपुराण, शिवपुराण, गरुड़पुराण, विष्णुपुराण, पुराण-ही-पुराण।

इन व्याख्याओं का मूल व्याख्याकार कौन? मूल कोई तो होगा? अरे! किसी ने तो व्याख्या करने की शुरुआत की होगी, जो शास्त्रों में भी प्रसिद्ध है। सुना होगा- सांख्य योग। 'सांख्य' का मतलब है= सह+आख्या, व्याख्या। 'स' माने साथ, व्याख्या के साथ। जैसे- मुरली है, इतने साल मुरली पढ़ते रहे, ब्रह्माकुमारियाँ अभी तक भी सुन और पढ़ रही हैं। उस मुरली के तंत को जाना, बाप को पहचाना? नहीं पहचाना। क्यों नहीं पहचाना? (किसी ने कहा- समझा नहीं) क्योंकि मुरली सुनी, सुनाई तो; लेकिन व्याख्या नहीं मिली। व्याख्या न मिलने के कारण समझ में ही नहीं आई। तो भगवान स्वयं ही व्याख्या करता है; जैसे- प्राइमरी स्कूल में बेसिक नॉलेज लेते समय छोटे बच्चे कबीरदास/सूरदास/तुलसीदास के कवित्त, चौपाइयाँ वगैरह पढ़ते हैं, रटते हैं, सुनते हैं, सुनाते हैं; लेकिन उसके मर्म/रहस्य को नहीं जानते; क्योंकि व्याख्या को समझ नहीं सकते, बुद्धि विशाल नहीं बनी है, सगीर बुद्धि नहीं बने हैं। बड़े बच्चे हो जाते हैं, सगीर बुद्धि बनती है, तो हायर क्लासेस में, जहाँ एडवांस ज्ञान मिलता है, उन्हीं कवित्त/चौपाइयों

की व्याख्या टीचर/प्रोफ़ेसर/लेक्चरर के द्वारा मिलती है, तो गहराई को समझते हैं। इसका फाउण्डेशन कहाँ पड़ता है? संगमयुग में फाउण्डेशन पड़ता है।

सुप्रीम सोल बाप भी आते हैं, तो बच्चों के सामने माँ के रूप में प्रत्यक्ष होते हैं। पहले-2 किसके रूप में प्रत्यक्ष होते हैं? सहनशीलता की प्रतिमूर्ति माँ के रूप में। कौन-सी माँ? (किसी ने कहा- दादा लेखराज ब्रह्मा द्वारा) ब्रह्मा के मुख से जो सुनते हैं, सुनाते हैं, उनको मुखवंशावली ब्राह्मण कहा जाता है। ब्रह्मा के मुख से निकले हुए भगवान के महावाक्यों को जिन्होंने प्रिफरेन्स दिया, वो असली ब्राह्मण- मुखवंशावली और जिन्होंने मुख से निकली हुई भगवान की वाणी को प्रिफरेन्स नहीं दिया, ध्यान ही नहीं दिया, छोटे-2 बच्चे हैं, गोद को महत्व दिया। प्यार कहाँ मिला छोटे बच्चों को? माँ से प्यार मिला तो गोद को प्रिफरेन्स दिया। बड़ा गुमान रहता है- अरे, तुम कल के बच्चे हो, तुम क्या जानो, हमने मम्मा-बाबा की गोद ली है! तुम हमको क्या समझाओगे! तो देखो, अभिमान रहता है ना! नहीं रहता है? स्वाभिमान रहता है या अपनी देहाभिमानी अम्मा का अभिमान रहता है? (किसी ने कहा- स्वाभिमान) स्वाभिमान रहता है? 'स्व' माने आत्मा का अभिमान रहता है? (किसी ने कहा- अम्मा का भी रहता है) अम्मा का भी रहता है और आत्मा का भी रहता है? माँ जो होती है, रचना है; रचयिता नहीं है। मुरली में भी बाबा कहते हैं- ब्रह्मा का बाप कौन? ''मुझे प्रजापिता ब्रह्मा ज़रूर चाहिए। ... ब्रह्मा का बाप कौन है? कोई बतावे।'' (मु.ता.4.11.73 पृ.2 मध्य) पूछा ना? तो बाबा बोलते हैं, पूछते हैं तो कोई तो बाप होगा ना! नहीं होगा? कौन है? यज्ञ के आदि में दादा लेखराज ब्रह्मा को किससे जन्म मिला कि मैं ब्रह्मा हूँ, मुझे सफेद पोश का साक्षात्कार हुआ। मैं ब्रह्मा सो विष्णु बनूँगा- विष्णु का साक्षात्कार हुआ। विनाश का साक्षात्कार हुआ- इस दुनिया का विनाश होने वाला है। नई दुनिया में मुझे कृष्ण के रूप में जन्म लेना है। साक्षात्कार के आधार पर बच्चा-बुद्धि पवित्र आत्मा को साक्षात्कार का लाभ, भावना का भाड़ा मिला या नहीं मिला? जिसने साक्षात्कार में प्रैक्टिकली अनुभव किया, उसको पक्का निश्चय हो गया कि मैं ब्रह्मा हूँ, मैं कृष्ण की आत्मा हूँ; औरों को अपनी आत्मा का निश्चय नहीं बैठा। तो दादा लेखराज के रूप में ब्रह्मा पहली रचना है; किन्तु तन पुरुष का है, दुर्योधन-दुःशासन का है; क्योंकि वाणी में बोला है- सब पुरुष दुर्योधन-दुःशासन है। ''सभी दुःशासन अथवा दुर्योधन हैं। द्रौपदियों के चीर सभी हरते हैं।'' (मु.ता.19.7.73 पृ.2 आदि) इसलिए शरीर छोड़ने के बाद जिस माता के शरीर में वो ब्रह्मा प्रवेश हो करके तामसी पार्ट बजाता है, उसकी यादगार अधूरे चंद्रमा का चित्र माता के मस्तक पर दिखाया जाता है। जिस माता में प्रवेश करता है, वो माता कौन? जगदम्बा, महाकाली। वो महाकाली, जिसमें चंद्रमा की सोल प्रवेश है। वो ही महाकाली, जिसके लिए आज तक भी सिक्खों में गायन है- 'राज करेगा खालसा।' यह ब्राह्मणों की तीसरी रचना है, जिस तीसरी रचना में वो महाकाली रूपी माता सारे ही मनुष्यमात्र के हुजूम को अपनी मुट्ठी में ले करके चलती है और इसकी शुरुआत कब से होगी? तुम बच्चों को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40 वर्ष लगते हैं। ''तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।'' (मु.ता.5.10.79 पृ.2 मध्यांत) वो कौन-से बच्चे हैं, कितने बच्चे हैं? आठ की राजधानी सौ परसेण्ट कम्प्लीट तैयार होती है; अधूरी राजधानी बनेगी या कम्प्लीट राजधानी बनेगी? कम्प्लीट राजधानी, जिसमें कोई नुक्स नहीं। बाकी आठ के अलावा सब किसके कण्ट्रोल में होंगे? महाकाली के कण्ट्रोल में होंगे, जिसे जगद्+अम्बा कहा जाता है, सारे जगत की अम्बा। फिर जैसे 1976 के बाद एक-2 करके ब्राह्मणों के तीसरे नए संगठन में आते रहे, तीसरी नई दुनिया में आत्माएँ आती जाती हैं। ऐसे ही उस चौथे संगठन की राजधानी में एड होते जाएँगे- 8 की राजधानी से लेकर 2028 तक कम्प्लीट राजधानी स्थापन होती है, जहाँ के लिए कहा- तुम बच्चों को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में ज़्यादा-से-ज़्यादा 50 साल लगते हैं। 50 साल पूरे होंगे और तुम्हारी कम्प्लीट राजधानी तैयार हो जाएगी। (किसी ने कहा- सूर्यवंशी और चंद्रवंशी, दोनों की)

बस, फिर 10 साल रह जाएँगे, जिसमें दूसरे धर्म के धर्मपिताएँ भी प्रत्यक्ष होंगे। वो धर्मपिताएँ भी, जिनमें सृष्टि के आदिपुरुष की मान्यता रही है; सभी धर्मों में आदिपुरुष की मान्यता है; वो धर्मपिताएँ भी अपने बाप को पहचानेंगे, सलामी भरेंगे; परन्तु जन्म-जन्मांतर का ज़्यादा देह-अहंकार होने के कारण उस जगत्पिता बाप को नहीं मानेंगे। क्यों? क्योंकि वो ज्ञान-चंद्रमा ब्रह्मा की गोद के बच्चे हैं, कुखवंशावली हैं। कुख, गोद को कहा जाता है। गोद माने देह, देह के बच्चे। देहधारी हैं, देह-अहंकार बहुत भयंकर है। वो बाप को भी नहीं मानेंगे, माँ को मानेंगे, जिस माँ के ऊपर जोर-ज़बरदस्ती भी कर सकते हैं। जैसे सारी मनुष्य-सृष्टि में 500-700 करोड़ पत्तों में पहला पत्ता कौन-सा है? कौन-सी आत्मा? (किसी ने कहा- कृष्ण उर्फ ब्रह्मा वाली आत्मा) जो जब से जन्म लेती है, तब से देह-अभिमान में रहती है। ना मानो तो लक्ष्मी-नारायण के चित्र के नीचे प्रथम सतयुगी राधा-कृष्ण को देख लो। कौन-सी इन्द्रियों का देहभान है? (किसी ने कहा- आँख का) आँख देह का अंग है या नहीं? (किसी ने कहा- है) तो वो मनुष्य सृष्टि-वृक्ष का पहला पत्ता मूल आत्मा है, देह-अभिमानियों का बाप। कौन? (किसी ने कहा- कृष्ण उर्फ ब्रह्मा) उसके वंशावली के ये सारे ही बच्चे हैं। कौन? इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट और उनके फॉलोअर्स। ये सिद्धार्थ-जीसिस जैसी आधारमूर्त माताओं को मानेंगे, बाप को नहीं मानेंगे। माँ की रहबरी में रहेंगे, माँ को सपोर्ट करेंगे और माँ को अपने बच्चों पर गुमान रहता है- मेरे बच्चे कुछ भी करेंगे, मेरी रक्षा करेंगे; बाप की धत् तेरी की कर देंगे। तब क्या होता है? माँ को भी बच्चों का देह-अहंकार चढ़ेगा या नहीं? (किसी ने कहा-चढ़ेगा) तो महाविनाश के अंत तक भी वो जगदम्बा की भुजाएँ बाप से लड़ाई लड़ेंगी और बाप का ज्ञान नहीं सुनेंगी। जैसे बाप के जो बच्चे साकारी सो निराकारी बाप को सपोर्ट करने वाले नहीं हैं, वो धर्मपिताएँ सपोर्ट नहीं करेंगे, तो जगदम्बा भी सपोर्ट नहीं करेगी, अंत तक लड़ेगी, भले सारी दुनियाँ का विनाश हो जाए। कारण? (किसी ने कहा- देहभान) क्योंकि जड़ प्रकृति है। कृति माने रचना कैसी है? जड़त्वमयी। बुद्धि चैतन्य नहीं है; इसलिए मुरली में बोला है- कोई-2 बच्चे ऐसे जड़त्वमयी बुद्धि वाले हैं कि लम्बे समय तक जगत्पिता बाप के साथ रहने के बावजूद भी बाप को नहीं पहचान पाते; क्योंकि बुद्धि कैसी है? (सभी ने कहा- जड़त्वमयी) ''मैं जो हूँ, जैसा हूँ, साथ रहने वाले भी समझ नहीं सकते हैं।'' (मु.ता.4.2.74 पृ.3 अन्त) उस माँ की भी बुद्धि ऐसी है, तो माँ की गोद में खेलने वाले बच्चों की भी बुद्धि ऐसी है- चाहे वो मूल देहाभिमानी ब्रह्मा हो, चाहे वो इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक या उनके फॉलोअर्स हों। सन् 1947 से पहले ब्रह्मा भी कौन-सी माता की गोद में पला था? (किसी ने कहा- जगदम्बा) कोई माता थी, जो मम्मा-बाबा को भी डायरैक्शन देती थी? (सभी ने कहा- थी) उन बच्चों ने बाप को लात मार दी, सपोर्ट नहीं किया और किसको सपोर्ट किया? उसी माँ को सपोर्ट किया।

तो यह प्रकृष्ट रचना रूपी माता प्रकृति दो प्रकार की है- एक जड़ प्रकृति- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश और एक चैतन्य। उन पाँचों तत्वों में पृथ्वी का मुख्य पार्ट है। जो पृथ्वी जब कम्पायमान हो जाएगी। कब कम्पायमान होगी? (किसी ने कहा- ऐटम बम्बों के धमाकों से) फिर! (किसी ने कहा- भूकम्प से) 'भूकम्प' माने पृथ्वी का कम्पायमान होना। 'भू' माने पृथ्वी, 'कम्प' माने कम्पायमान। वो तब कम्पायमान होगी, जब देखेगी कि मेरे गोद के बच्चे, चाहे वो ब्रह्मा हो, चाहे इब्राहीम-बुद्ध-क्राइस्ट हों, चाहे उनके बड़े-से-बड़े पावरफुल फॉलोअर्स हों, कोई के हाथ में इस सृष्टि की सत्ता अब नहीं रहने वाली है; अब यह सारी सृष्टि और उस सृष्टि के साथ मेरा भी क्या होने वाला है? (किसी ने कहा- खलास) सारी सृष्टि जलमई होने वाली है, जल-ही-जल होगा। एक है हद का जल और एक है बेहद का ज्ञान-जल। बेहद का ज्ञान-जल बेहद ब्राह्मणों की दुनिया में होगा। 500 करोड़ की दुनियाँ भी कभी ब्राह्मण बनेगी या नहीं बनेगी? (किसी ने कहा- बनेगी) नौ कुरियों के ब्राह्मण हैं, नौ ही धर्मपिताएँ हैं, नौ ही मुख्य धर्म हैं, उनके फॉलोअर्स भी नौ प्रकार के हैं; तो साकारी सो निराकारी बने मनुष्य-सृष्टि के बाप शिवलिंग को न जानने कारण सारी दुनियाँ ब्रह्मा के ज्ञान को सुनेगी, मानेगी, जानेगी; लेकिन सपोर्ट किसको करेगी? माँ को सपोर्ट करेगी; इसलिए

एक ही ऑलराउण्ड हीरो पार्टधारी बाप रहेगा और सब अनिश्चय-बुद्धि (हो जाएँगे)। कैसे अनिश्चय-बुद्धि होंगे? ज्ञान-जल की भयंकर बाढ़ आएगी सारी दुनियाँ में। सारी दुनियाँ जलमई हो जाएगी। जब बाढ़ आती है तो देह-अभिमान की मिट्टी पानी में मिल जाती है। ज्ञान-जल में जब देह-अभिमान की ढेर सारी मिट्टी मिल जाएगी, तो जो काम-वासना के कीड़े-जैसे हैं, सर्प-बिच्छू-टिण्डन हैं, वो साँप बाढ़ के जल में (किसी ने बीच में कहा- बह जाएँगे) नहीं, सभी बह तो जाते ही हैं। सब अंधे भी हो जाते हैं। अज्ञान-अंधकार फैल जाता है। सारी सृष्टि में अज्ञान-अंधकार फैल जाएगा। जैसे पहली बार ब्रह्मा ने ब्राह्मणों की सृष्टि रची, उस सारी सृष्टि में अज्ञान-अंधकार फैल गया, एक अविनाशी बीज-रूप बाप ही बचा। दूसरी बार सृष्टि रची 1947 में, 1969 से 1976 के बीच अज्ञान-अंधकार फैल गया। किसी ने नहीं जाना कि लक्ष्मी-नारायण का जन्म कैसे हुआ, कैसे नहीं हुआ। पुरानी ब्राह्मणों की बेसिक दुनिया कैसे खलास हुई और नई एडवांस दुनिया की कैसे शुरुआत हुई- अंततः एक के सिवाय किसी ब्राह्मण ने नहीं जाना कि असलियत क्या है। ऐसे ही 2017/18 के आस-पास का टाइम है, जहाँ ज्ञान-जल की ऐसी बाढ़ आएगी, ऐसी देह-अभिमान की मिट्टी मिल जाएगी कि उस बाढ़ में सारे काम के भोगी, जो भोग-वासनाओं को त्याग ही नहीं सकते, काम के चेरे हैं; क्योंकि एक का ही गायन है- कामदेव को भस्म किया। सारे ही उस काम-वासना में ऐसे अंधे हो जाते हैं, जो बाबा कहते हैं- आगे चलकर तो ये मनुष्यों की सृष्टि बन्दरों के मिसल हो जावेगी। ''बन्दरों में विकार बहुत होते हैं। बाप भी कहते हैं बन्दर मिसल मनुष्य बन पड़े हैं।'' (मु.ता.9.9.68 पृ.2 अंत) जैसे बन्दर-बंदरिया वृक्ष की चोटी पर चढ़ करके काम-विकार भोगते हैं, कोई शर्म/लिहाज़ नहीं, ऐसी सृष्टि हो जाएगी। तो सारी दुनियाँ के वायब्रेशन कैसे बनेंगे- निर्विकारी बनेंगे या विकारी बनेंगे? (किसी ने कहा- विकारी) देह-अभिमान के बनेंगे कि आत्मा-अभिमान के बनेंगे? (किसी ने कहा- देह-अभिमान के) सारी दुनियाँ की जलमई हो जावेगी, सब डूब मरेंगे; एक ही बचेगा, जो ईश्वरीय साक्षात्कार से बने सृष्टि रूपी वृक्ष के ऊपर दिखाया गया है। कौन है? (किसी ने कहा- शंकर मार्शल) नंगा क्यों दिखाया है? (सभी ने कहा- देहभान नहीं) देहभान के वस्त्र का भान नहीं है। जैसे कि देह और देह की इन्द्रियाँ हैं ही नहीं; लिंग-रूप हो गया। यादगार लिंग में हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान होते ही नहीं, सारी ही दुनियाँ में जिस लिंग की मान्यता है। देश-विदेश की खुदाइयों में हर जगह वो लिंग की मूर्तियाँ मिली हैं, जिसका सात्विक रूप द्वापर के आदि में देखा गया। द्वापरयुग पहले सतोप्रधान होता है ना! द्वापर के आदि में सोमनाथ मंदिर में दिखाया गया- लाल पत्थर का लिंग और बीच में (किसी ने कहा- हीरा दिखाया गया)। हीरा किसकी यादगार है? (किसी ने कहा- शिवबाप की) शिवबाप की यादगार है? शिवबाप तो कहते हैं- ''मैं न पूज्य बनता हूँ, न पुजारी बनता हूँ।'' (मु.ता. 22.05.71 पृ.1 अंत) तो बताओ, वो सोमनाथ मंदिर में जो लिंग रखा था और जो बिन्दु रखा था, वो कौन-सी आत्मा की यादगार है? (किसी ने कहा- निराकारी स्टेज वाली आत्मा की) हाँ! उस आत्मा की यादगार है, जो पूज्य ही बनती है और पुजारी नहीं बनती है। ओम् शांति।